दिवाकर चित्रकथा

# सम्राट सम्प्रति

प्राकृत भारती अकादमी जयपुर

अंक ४५

मूल्य 20.00

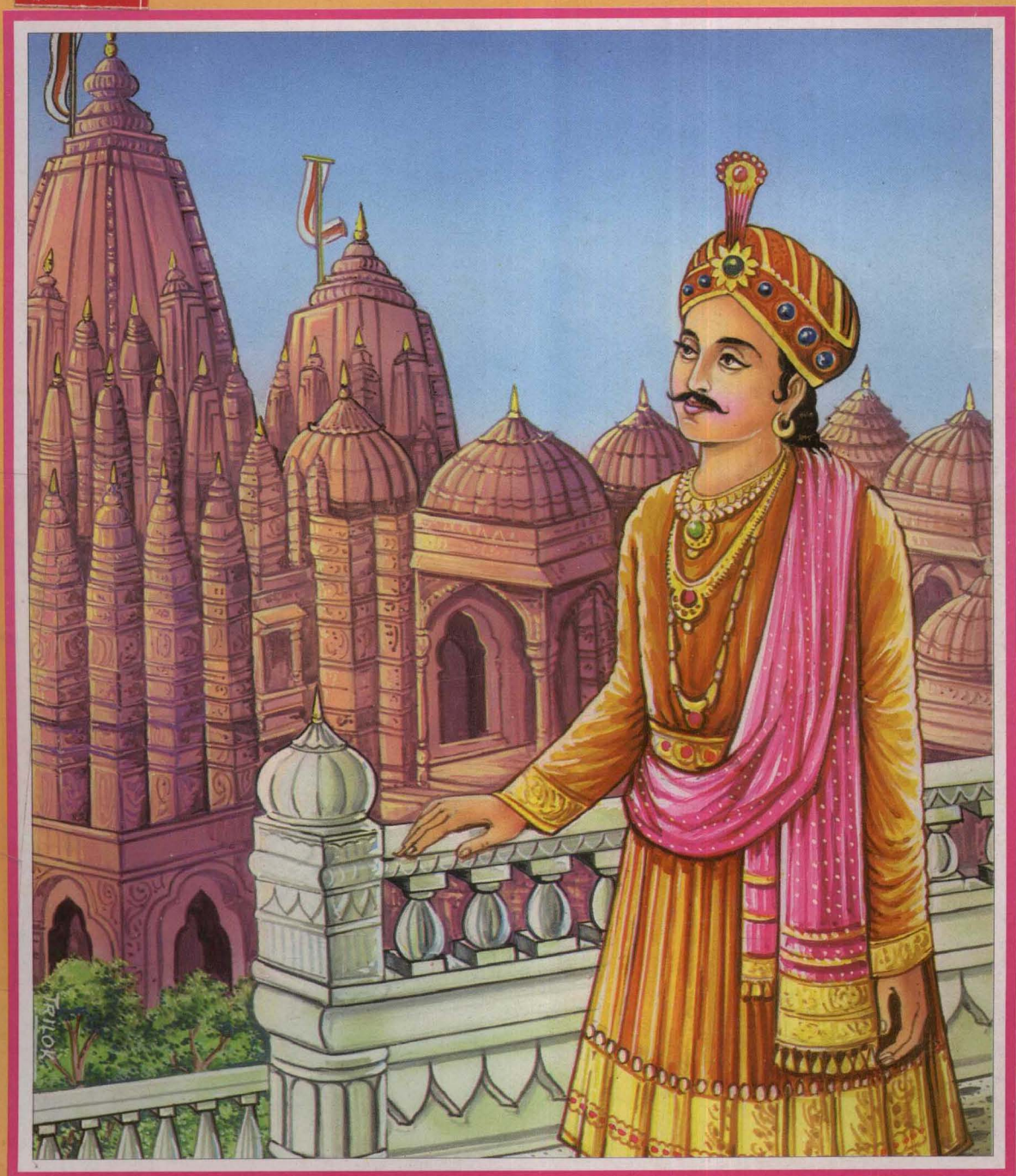

सुसंस्कार निर्माण | विचार शुद्धि : ज्ञान वृद्धि | मनोरंजन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# सम्राट सम्प्रति

भारतीय इतिहास में सम्राट अशोक का नाम और स्थान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। विशेषकर बौद्धधर्म के इतिहास में जो महत्त्व अशोक का है लगभग वही महत्त्व जैनधर्म के इतिहास में अशोक पौत्र सम्प्रति का है। सम्पूर्ण भारत और भारत के बाहर विदेशों में जैनधर्म और संस्कृति का प्रसार करने में सम्राट सम्प्रति ने जो योगदान दिया है वह हजारों वर्ष बाद आज भी इतिहास का उज्ज्वल प्रेरक अध्याय बना हुआ है।

जैनधर्म के प्राचीन ग्रंथों—चूर्णि (वि. ७वीं सदी) भाष्य, टीका आदि में अनेक स्थानों पर अशोक पुत्र कुणाल के अंधा होने की घटना तथा सम्प्रति के पूर्वजन्म का प्रसंग व जैनधर्म के प्रसार हेतु विदेशों में श्रावकों को भेजने की चर्चा उपलब्ध है, इससे उसकी ऐतिहासिकता मे किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। किन्तु आश्चर्य है इस प्रतापी और धर्मात्मा वीर सम्राट के सम्बन्ध में भारतीय इतिहास लेखक चुप क्यों रहे ?

सम्राट सम्प्रति का यह कथात्मक चरित्र कुणाल की अगाध पितृ-भक्ति, आचार्य सुहस्ति का आदर्श करुणा भाव, सम्प्रति की धर्म-श्रद्धा, जिनभक्ति एवं गुरु भक्ति तथा जिनशासन प्रजा के हित में किये गये महत्वपूर्ण कार्य साथ ही वीरता, राजनीति कुशलता आदि अनेक गुण इस चरित्र में उभर रहे हैं। जो प्रेरक होने के साथ उसके उज्ज्वल चरित्र को भी दर्शाते हैं।

यह कथा प्रसंग पं. काशीनाथ जैन द्वारा लिखित "सम्राट सम्प्रति" पुस्तक को आधार मानकर लिखा गया है। जिसमें अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य भी हैं।

आचार्यश्री विजय सुशील सूरीश्वर जी के उत्तराधिकारी आचार्यश्री विजय जिनोत्तम सूरीश्वर के ने इस पुस्तक का लेखन किया है।

*—महोपाध्याय विनय सागर* *—श्रीचन्द सुराना 'सरस'*


*लेखक :* आचार्यश्री विजय जिनोत्तम सूरि.

| *सम्पादक :* | *प्रकाशन प्रबंधक :* | *चित्रांकन :* |
|---|---|---|
| श्रीचन्द सुराना "सरस" | संजय सुराना | श्यामल मित्र |

**प्रकाशक**

**श्री दिवाकर प्रकाशन**

ए-7, अवागढ़ हाउस, अंजना सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड, आगरा-282 002. दूरभाष : 0562–351165

**सचिव, प्राकृत भारती एकादमी, जयपुर**

13-ए, मेन मालवीय नगर, जयपुर-302 017. दूरभाष : 524828, 561876, 524827

**अध्यक्ष, श्री नाकोड़ा पार्श्वनाथ तीर्थ, मेवानगर (राज.)**

**श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन सभा**

18/D, सुकेस लेन, कलकत्ता-700 001. दूरभाष : (242) 6369, 4958 फैक्स : (210) 4139



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# सम्राट् सम्प्रति

पाटलीपुत्र में आज सम्राट् अशोक का विजयोत्सव मनाया जा रहा है। विशाल राजसभा के बीच एक ऊँचे सिंहासन पर सम्राट् अशोक आसीन हैं। दोनों तरफ अमात्य, रामपुरोहित, सेनापति तथा अन्य सामन्तगण एवं हजारों नागरिक बैठे हैं। तभी सन्देशवाहक ने सोने के थाल में रखकर पत्र भेंट किया–

राजा ने लिपिकार को आशीर्वाद पत्र लिखने का आदेश दिया और विश्राम करने राजमहल में चले गये।

कुछ देर बाद लेखपाल पत्र तैयार करके ले आया। सम्राट् ने पत्र पढ़ा, उसके नीचे अपने हाथ से एक पंक्ति और लिखी–

फिर राजमुद्रा लगाकर पत्र वहीं रख दिया।

भोजन का समय हो गया था। सम्राट् पत्र वहीं छोड़कर भोजनगृह की ओर चल दिए। रानी तिष्यरक्षिता ने इधर-उधर देखा। कोई नहीं था। उसने एक सलाई ली, आँखों के काले अंजन को सलाई पर लगाया। और महाराज के संदेश पर एक बिन्दु लगा दिया।

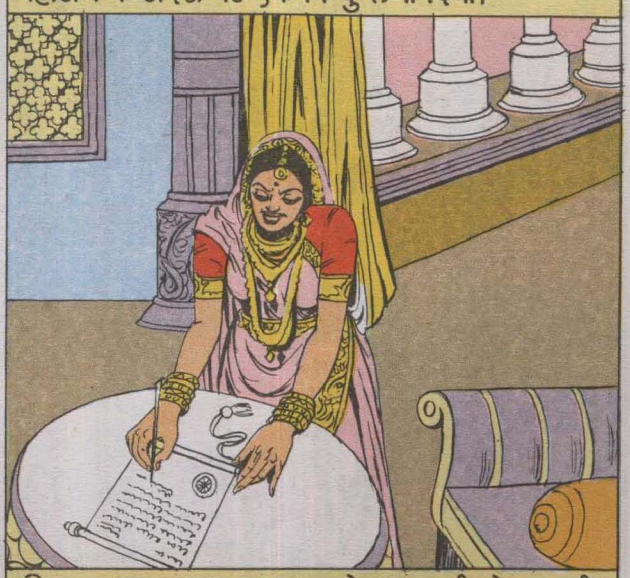

फिर पत्र वापस रखकर चुपचाप भोजन कक्ष की ओर चल दी।

१. कुणाल सम्राट् अशोक की सबसे बड़ी रानी का ज्येष्ठ पुत्र था। मृत्यु के समय रानी को महाराज ने वचन दिया था–कुणाल ही मौर्य साम्राज्य का उत्तराधिकारी होगा। तिष्यरक्षिता आदि अन्य रानियाँ कुणाल को मारना चाहती थीं। उसकी जीवनरक्षा के लिए महाराज ने पाटलीपुत्र से दूर अवन्ती में कुणाल को रखा ताकि उसे कोई हानि नहीं पहुँचा सके।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समय पश्चात् सम्राट् ने दूत के साथ पत्र अवन्ती भेज दिया। दूत पत्र लेकर अवन्ती पहुँचा। सभा में मंत्री ने पत्र पढ़ा। पत्र पढ़ते ही मंत्री को साँप सूँघ गया। कुणाल ने पूछा–

चाचाजी, पत्र में ऐसी क्या बात लिखी है? जिसे पढ़कर आप एकदम चुप हो गये। कृपया हमें बताइए पिताश्री ने क्या लिखा है?

मंत्री ने कठोर हृदय करके पत्र पढ़ा–

महाराज ने लिखा है–

अंधीयतां कुमारः। (कुमार को अंधा कर दिया जाय)

हे भगवान ऐसा कठोर आदेश।

क्या?

सारी सभा में सन्नाटा छा गया। सभी एक-दूसरे का मुँह देखने लगे।

कुणाल ने कहा–

पिताश्री की आज्ञा का पालन करना मेरा कर्त्तव्य है। लाइये लोह शलाका लेकर मेरी आँखें फोड़ दीजिए।

और कुणाल ने गर्म लोहे की सरिया लेकर अपनी आँखों में भर लिए।

सभा शोक मग्न हो गई।

नगर में गली-गली में लोग कहने लगे–

अरे ! सुना है राजकुमार ने पिता की आज्ञा से आँखें फोड़ लीं।

सम्राट् अशोक ऐसा आदेश नहीं दे सकते। एक पिता पुत्र को अँधा करने का आदेश कैसे दे सकता है?

हमें तो इसमें कुमार की सौतेली माताओं की चाल लगती है।

रानी तिष्यरक्षिता ने "अधीयतां कुमार" को "अंधीयतां कुमार" कर दिया था।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समय बाद सम्राट् अशोक के पास दूत समाचार लेकर आया—

आपकी आज्ञा से राजकुमार कुणाल ने अपनी आँखें फोड़ लीं हैं।

हैं ! मैंने ऐसी कठोर आज्ञा कब दी?

दूत ने महाराज को पत्र दिखाया तो वे चौंक गये—

अधीयतां को अंधीयतां किसने कर दिया? कब किया? कौन छिपा शत्रु है यह?

सम्राट अशोक दुःख के सागर में डूब गये।

इधर अवन्ती में अँधा कुणाल धाय माता सुनन्दा की देख-रेख में पलने लगा। अँधेपन के एकाकी जीवन में कुणाल ने तानपूरे को अपना साथी बना लिया। वह एकान्त में तानपूरा बजाता रहता और प्रभु आदिनाथ की भक्ति करता रहता।

जय आदिनाथ जग हितकारी जय वीतराग मंगलकारी.....

समय अपनी गति से चलता रहा।

एक दिन कुणाल की धाय माता सुनन्दा ने सम्राट् अशोक को पत्र भेजा। सम्राट् ने पत्र पढ़ा—

महाराज अशोकवर्द्धन के चरणों में सुनन्दा का प्रणाम। कुमार कुणाल अब बीस वर्ष का हो गया है। दिन-रात एकाकी प्रभुभक्ति में अपना नीरस जीवन बिता रहा है। निवेदन है किसी योग्य राजकुमारी के साथ कुमार का विवाह कर दिया जाय तो उसके सूने जीवन में फिर से बहार आ सकती है।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्राट् अशोक ने पत्र पढ़ा और आदेश भेजा। दूत आदेश पत्र लेकर वापस अवन्ती आया। मंत्री को पत्र दिया–

कुमार कुणाल को पास के एक छोटे प्रदेश का राज्य दिया जाता है। कोई योग्य कन्या देखकर कुमार का विवाह कर दिया जाय।

राजाज्ञा के अनुसार कुणाल को एक छोटे से प्रदेश का राजा बना दिया गया।

और एक सामन्त की कन्या शरतश्री के साथ उसका विवाह हो गया।

एक दिन कुणाल ने शरतश्री से कहा–

आज आषाढ़ी पूर्णिमा है। हम जिन मन्दिर में जाकर भक्ति करेंगे।

राजकुमार और शरतश्री ने भक्तिभाव से प्रभु की पूजा की और फिर दोनों ने मिलकर भक्ति संगीत गाया। भक्ति-संगीत को सुनकर श्रोता झूमने लगे–

वाह ! स्वर में क्या मिठास है ! क्या तन्मयता है !

प्रभु भक्ति बिन जीवन सूना ....

पूनम की रात मन्दिर में भक्तिगीत की रसधार बहती रही।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगले दिन शरतश्री ने कुणाल से कहा–

स्वामी ! पास ही उपाश्रय में आर्य सुहस्ती के शिष्य मुनिराज विराजमान हैं। उनके दर्शन भी कर लेवें।

सुविचार है।

कुमार अपने परिवार के साथ मुनिराज के दर्शन करने गया। मुनिवर ने कहा–

कुमार रात्रि कालीन आपकी भक्ति तल्लीनता देखकर तो हमारा मन भी गद्‌गद हो गया। भक्ति के साथ धर्म का बोध और धर्माचरण का संगम हो जाय तो सोने में सुगंध मिल जाय।

गुरुदेव ! मुझे आप धर्म का बोध दीजिए। इस अपंग जीवन में तो धर्म ही मेरा सहारा है।

मुनिराज ने कहा–

प्रतिदिन प्रवचन में वीतराग वाणी का श्रवण कीजिए। जीवन में शान्ति का अनुभव होगा।

अब कुमार अपने परिवार के साथ प्रतिदिन प्रवचन सुनने आता और वीतराग वाणी सुनकर प्रसन्न होता। एक दिन राजकुमार ने मुनिराज से निवेदन किया–

गुरुदेव ! आपकी वाणी सुनकर तो मेरा मन संसार से विरक्त हो गया है। मैं भी शुद्ध संयम का पालन कर आत्म-कल्याण करना चाहता हूँ।

कुमार, आप गृहस्थाश्रम में रहकर ही धर्माराधना कर सकते हैं। आँखें नहीं होने से जीव दया का पालन नहीं हो सकता और जीव दया के बिना चारित्र की शुद्ध आराधना नहीं हो सकती।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुरुदेव ! फिर मैं गृहस्थ जीवन में रहकर ही अधिकाधिक नियम, व्रत, शील का पालन कैसे करूँ? मुझे मार्गदर्शन दीजिए।

मुनिराज ने कुमार को श्रावक धर्म का स्वरूप समझाया। कुणाल तथा शरतश्री दोनों ने गृहस्थ धर्म अंगीकार कर लिया।

वत्स देश की राजधानी कौशाम्बी उन्हीं दिनों की घटना है मगध और अंग आदि प्रदेशों में दुष्काल की काली छाया मंडरा रही थी। वत्स देश की राजधानी कौशाम्बी में दुष्काल का भयंकर प्रकोप था। गली-गली में घर-घर पर भिखारी पुकार रहे थे–

हे दयालु पुरुषों ! तीन दिनों से खाने को अन्न का एक दाना भी नहीं मिला है। भूख से बाल-बच्चे बिलबिला रहे हैं। कोई भी दयालु रोटी का टुकड़ा दे दो।

भागो, यहाँ से।

मारो हमें मारो ! भूख भी मार रही है तुम भी मारो। इस नारकी जीवन से तो अच्छा है मर जायें। भूख से पिंड छूटे।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसी समय दो युवा श्रमण भिक्षा पात्र हाथ में लिए नगर सेठ धनपाल के भवन की तरफ आये।

गुरुदेव ! पधारिये !

श्रमणों को आता देखकर सेवकों ने दरवाजा खुला छोड़ दिया, श्रमण जैसे ही भवन में घुसते हैं उनके पीछे-पीछे एक भिखारी छुपता-छुपता भीतर आ गया। दण्डधारी सेवकों ने उसे रोक दिया–

अरे ! कहाँ घुस रहा है? रुक जा !

बाबा ! तीन दिन का भूखा-प्यासा हूँ। देखो पेट की पसलियाँ दीख रही हैं। एक रोटी दे दो। भूख से मरा जा रहा हूँ और दम भी नहीं निकल रहा है।

सेवकों ने उसे रोक दिया–

ठहर जा ! अभी गुरुदेव आहार के लिए पधारे हैं। हल्ला मत कर।

भिखारी टुकर-टुकर देख रहा है–

अहा ! क्या स्वादिष्ट भोजन है। इसकी सुगंध से ही मेरे मुँह में पानी छूट रहा है।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बस, इतना ही आहार पर्याप्त है।

गुरुदेव ! ये मोदक तो लीजिए।

सेठानी प्रार्थना कर रही है–

गुरुदेव ! थोड़ी खीर तो और ले लीजिए।

नहीं ! अब खप नहीं है।

घर के बाहर खड़ा भिखारी यह दृश्य देखकर चकित रह जाता है। भीख माँगना तो भूल गया और सोचता है–

संसार में कहाँ इन साधुओं का जीवन है और कहाँ मेरा जीवन है। कल इसी सेठ ने मुझे बैंतों से मारकर भगाया था और आज यही कंजूस सेठ मुनि को आग्रह करके भक्ति से इतना स्वादिष्ट देव-दुर्लभ भोजन दे रहा है। धन्य है इनका जीवन !

दोनों मुनि आहार-भिक्षा लेकर बाहर आते हैं। भिखारी सोचता है–

इस कंजूस सेठ से तो कुछ मिलने की आशा नहीं, क्यों न इन साधुओं से ही माँगू। जैन साधु बड़े दयालु होते हैं। यदि थोड़ा-सा भोजन दे देंगे तो मेरा पेट भर जायेगा।

भिखारी दौड़कर मुनियों के पास पहुँचा। बोला–

हे मुनि ! तीन दिन से भूखा भटक रहा हूँ। अन्न का एक दाना भी नहीं मिला। आप दयालु हैं, अपनी झोली में से थोड़ा-सा भोजन मुझे दीजिए।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भिखारी की करुण पुकार सुनकर मुनियों के पाँव अटक गये–

भद्र पुरुष ! क्या बात है?

महात्मा जी, तीन दिन से भूखा भटक रहा हूँ। अन्न के बदले डंडों की मार मिल रही है। भूख के मारे चला नहीं जा रहा है। थोड़ा-सा भोजन मुझे दे दीजिए। मेरी जान बच जायेगी।

मुनियों ने कहा–

भोजन देने का अधिकार हमें नहीं है। तुम हमारे गुरु जी के पास चलो, वे ही दे सकते हैं।#

भिखारी मुनियों के पीछे-पीछे चलता हुआ सीधा उपाश्रय में आता है। उपाश्रय के बाहर ही चबूतरे पर आर्य सुहस्ती स्वामी खड़े हैं। मुनियों ने वन्दना की। भिखारी ने भी अपने हाथ फैलाये–

हे देव पुरुष ! महात्मा ! मुझ भूखे पर दया कीजिए। थोड़ा-सा भोजन दिला दीजिए। भूख के मारे प्राण छटपटा रहे हैं।

मत्थएण वन्दामि

आचार्यश्री भिखारी की तरफ देखते हैं। भिखारी की दीन दशा देखकर उनका मन द्रवित हो गया। आँखें मूँदकर कुछ सोचते हैं। अचानक उनके चेहरे पर चमक आ जाती है–

ओह ! यह घटना किसी उज्ज्वल भविष्य का संकेत दे रही है। इस भिखारी की आत्मा एक दिन जैन शासन की प्रभावना करेगी।

# ये श्रमण आर्य सुहस्ति के शिष्य थे। आर्य सुहस्ती दशपूर्वधर श्रुत ज्ञानी आचार्य थे। आर्य स्थूलभद्र के पश्चात् उनके पट्टपर दशपूर्वधर आचार्य महागिरि हुए। महागिरि और सुहस्ती दोनों ही आर्य स्थूलभद्र के शिष्य थे।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री ने कुछ सोचकर कहा–

वत्स ! भिक्षा से प्राप्त भोजन साधु किसी अन्य गृहस्थ को नहीं दे सकते।

हे दयालु पुरुष ! मैं भूख से मर रहा हूँ। क्या किसी मरते मनुष्य को बचाना आपका धर्म नहीं है।

भद्र ! यदि तू साधु बन जाये तो भरपेट भोजन पा सकता है। इस भिक्षा पात्र का भोजन केवल साधु ही कर सकता है।

मैं तैयार हूँ। मुझे दीक्षा दीजिए। मैं साधु बनकर आप जैसा कहेंगे, करूँगा।

आचार्यश्री ने वहीं पर उस भिखारी को दीक्षा दी। मुनिवेष दिया और कहा–

चल भीतर ! अब भरपेट भोजन कर ले।

नवदीक्षित साधु ने डटकर लड्डू-खीर आदि का भोजन किया।

फिर आचार्यश्री ने श्रावक-श्राविकाओं के सामने उस नवदीक्षित मुनि को उपस्थित कर कहा–

यह आज का दीक्षित मुनि है।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धनवान सेठ-सेठानियों ने भक्तिपूर्वक मुनि की वन्दना की। उनकी चरण धूलि लेकर सिर पर लगाने लगे। नवदीक्षित मुनि सोचता है–

ये सेठ सेठानी कभी मुझे बैंतों से पिटवाते थे। धक्के मार-मारकर भगाते थे। आज मुनि बनते ही मेरे पाँव छू रहे हैं। धन्य है मुनि का जीवन।

आचार्यश्री ने नवदीक्षित मुनि से कहा–

देख, यह सब मुनि के त्यागी जीवन की महिमा है। दुनियाँ में त्याग व व्रत की पूजा होती है।

गुरुदेव ! मुझे व्रत की शिक्षा भी दीजिए, धर्म का बोध भी दीजिए।

आज पहले अपनी भूख मिटा ले, फिर धर्म बोध भी देंगे।

मध्याह्न के बाद नव दीक्षित ने कहा–

मुझे भूख लगी है। भोजन दीजिए।

यह गोचरी तेरे सामने रखी है, जितना खाना चाहे खाकर मन भर ले।

बहुत दिनों का भूखा वह भोजन पर टूट पड़ा। कुछ देर बाद बोला–

मेरा पेट फूल गया है। आह.... सांस नहीं ली जाती है।

वह भूमि पर गिरकर छटपटाने लगा। सेठ धनपाल ने वैद्य को बुलाया। वैद्य ने नाड़ी देखते हुए कहा–

अति भोजन से विशुचिका रोग हो गया है। दवा दे देता हूँ।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनेक धनवान सेठ-सेठानी उस नवदीक्षित मुनि की सेवा परिचर्या में जुट गये। कोई पेट पर लेप करता है, कोई हाथों पर दवा मल रहा है। यह सब देखकर नवदीक्षित मुनि सोचता है–

नव दीक्षित मुनि की अस्वस्थ दशा देखकर आचार्यश्री ने पास आकर नवदीक्षित मुनि को आराधना कराई–

इस प्रकार शुभ विचारधारा में बहते-बहते नवदीक्षित मुनि का आयुष्य पूर्ण हो गया। श्रावकों ने सम्मानपूर्वक मुनि की शरीर क्रिया सम्पन्न की।

**अवन्ती** संध्या के समय भवन की छत पर कुणाल अकेला ही एकान्त में बैठा सितार बजा रहा था। तभी धाय माता सुनन्दा ने आकर बधाई दी–

कुणाल एक क्षण के लिए प्रसन्न हुआ, परन्तु अगले ही क्षण उसके मुख पर मलिनता छा गई–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धाय माँ की बात सुनकर कुणाल के चेहरे पर चमक आ गई। उसने तानपूरा उठाया और एकदम खड़ा हो गया–

अगले दिन अंधे कुणाल ने तानपूरा गले में लटकाया, कंधे पर झोला डाला हाथ में लठ्ठी लेकर एक गरीब गवैये के वेष में पाटलीपुत्र की ओर चल पड़ा।

**पाटलीपुत्र** पाटलीपुत्र के राजमार्ग पर एक अंधा तानपूरा हाथ में लिए प्रभु भक्ति के गीत गाता हुआ घूम रहा है। उसके पीछे लोगों की भीड़ चल रही है। कुछ लोग कहते हैं–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोग उसे पूछते हैं–

आपका नाम क्या है?

मैं तो सूरदास हूँ। अंधा तानपूरा वाला।

कहाँ के रहने वाले हो? आपके साथ और कौन है?

प्रभु की यह सृष्टि ही मेरा घर है, यह तानपूरा ही मेरा परिवार है।

लोगों के प्रश्नों का उत्तर देता हुआ वह गाता-गाता आगे निकल जाता। जिस चौराहे पर खड़ा होकर गाता वहीं हजारों की भीड़ सुनने के लिए जमा हो जाती।

एक दिन सम्राट् अशोक राजसभा में बैठे थे। उन्होंने कहा–

सुबह से राजकार्य में लगे रहने से बहुत थक गये हैं। आज मनोरंजन के लिए कोई संगीत-नृत्य हो जाय।

महाराज ! नगर में एक अंधा गवैया आया हुआ है। सारा नगर उसके संगीत में पागल हो रहा है। उसका संगीत आप सुनेंगे तो सारी थकावट उतर जायेगी।

सम्राट् ने आदेश दिया–

बुलाओ उसको, हम आज उसी का संगीत सुनेंगे।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुणाल को राजसभा में बुलाया गया। उसे एक ओर बिठाकर पर्दा डाल दिया। सूरदास कुणाल ने तानपूरे पर हाथ रखा, तार झनझना उठे। स्वरों का जादू फूटने लगा। उसकी दर्द भरी मीठी आवाज सुनकर सम्राट् अशोक मंत्र मुग्ध हो गया–

कुछ देर तक संगीत के स्वर गूँजते रहे। श्रोता सिर धुनते रहे। झूमते रहे। थोड़ी देर में संगीत बन्द हुआ। तो तालियों की गड़गड़ाहट से राजसभा गूँज उठी।

सभा शान्त हुई तो सम्राट् ने कहा–

फिर सूरदास ने सितार पर अँगुलियाँ रखीं और एक पद्य गाया–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पद्य सुनते ही सम्राट् अशोक चौंक पड़े–

कौन हो तुम, बेटा कुणाल?

हाँ पिताश्री, आपका आज्ञा पत्र पाकर जो अंधा हो गया, वही आपका अभागा पुत्र कुणाल हूँ मैं।

सम्राट् ने कुणाल को छाती से लगा लिया। उसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

बेटा ! यह सब कैसे हो गया?

पिताश्री ! मेरा भाग्य ही ऐसा था तो किसको दोष दूँ। अब जो हो चुका उस पर आँसू बहाने से कोई लाभ नहीं।

अब सम्राट् सोचने लगे कि यह कैसे हो गया। अचानक उनके दिमाग में बिजली-सी कौंधी उन्हें वर्षों पुरानी घटना याद आ गई–

चलो प्रिय ! भोजन का समय हो गया।

आप चलिए स्वामी ! मैं अभी आती हूँ।

हूँ ! अवश्य ही यह उसी दुष्टा की करतूत है।

उसने तुरन्त सैनिकों को आदेश दिया–

रानी तिष्यरक्षिता को बंदीगृह में बन्द करके कड़ा पहरा लगा दिया जाये।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फिर कुणाल से बोला–

पुत्र ! मैं अपने इस कृत्य का प्रायश्चित्त कैसे करूँ?

पिताश्री ! मैंने आपसे वरदान में कागिणी की याचना की है। मेरे लिए यही पर्याप्त है।

वत्स ! तुमने माँगा भी तो क्या माँगा? एक कागिणी मात्र?

यह सुनकर महामंत्री ने निवेदन किया–

महाराज ! युवराज ने तो कागिणी के बहाने सबकुछ माँग लिया है। कागिणी राजपुत्रों का राज्य होता है।

परन्तु पुत्र ! तू राज्य लेकर क्या करेगा? किसके लिए राज्य माँगा है?

पिताजी, आपको पौत्र रत्न की प्राप्ति हुई है।

क्या? सच !

कुणाल के पुत्र प्राप्ति का समाचार सुनकर सम्राट् अशोक का हृदय उल्लास से भर उठा। उन्होंने पूछा–

बहूरानी, पौत्र सब कहाँ हैं?

आप द्वारा दिये गाँव में सब कुशल हैं।

सम्राट् अशोक ने तत्काल मन्त्री आदि को उन्हें लिवाने गाँव भेजा। पूरे सन्मान के साथ उन्हें पाटलीपुत्र लाया गया। विशाल समारोह मनाकर सम्राट् ने घोषणा की–

हमें सम्प्रति# सूचना मिली है। अतः बालक का नाम "सम्प्रति कुमार" होगा। पाटलीपुत्र के भावी शासक के रूप में हम इसे अधिष्ठित करते हैं।

सात दिन तक नगर में उत्सव मनाया गया।

# सम्प्रति = अभी-अभी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब कुणाल अपने परिवार के साथ पाटलीपुत्र में ही रहने लगा। समय के साथ सम्प्रति बड़ा होने लगा।

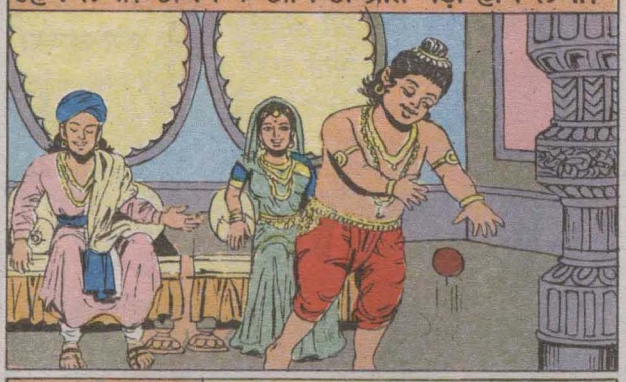

कुछ और बड़ा होने पर महाराज ने उसे राजकुमारोचित शिक्षा दिलाने की व्यवस्था की। सम्प्रति आचार्यों से विभिन्न शिक्षाएँ लेने लगा।

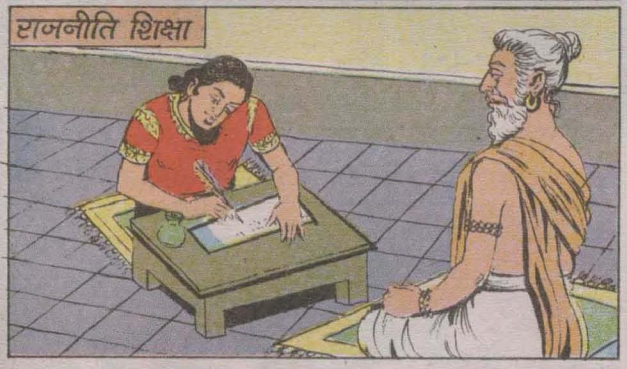

एक दिन महाराज अशोक राजसभा में बैठे थे। कुमार सम्प्रति भी पास ही बैठा था। तभी गांधार देश का एक सौदागर घोड़े लेकर आया। एक सुन्दर सजीला घोड़ा उसने महाराज को भेंट दिया–

सम्राट् ने सम्प्रति की ओर देखा–

Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महाराज ! राजकुमार अभी नौसिखिया हैं। इस घोड़े को वश में रखना हँसी खेल नहीं है।

सौदागर ! इसकी चिन्ता मत करो। इन भुजाओं में वह बल है जो संसार की सभी शक्तियों को अपने वश में कर सकती हैं।

सौदागर भी तैश में आ गया। बोला–

यदि आप इस पर सवारी कर लें तो मैं अपने एक सौ अश्व आपको भेंट दे दूँगा और नहीं तो आप मुझे क्या देंगे?

सौ घोड़ों का पूरा मूल्य।

सभी हँस पड़े।

सम्प्रति ने घोड़े पर एक चाबुक लगाई। घोड़ा उछला, दोनों पैरों से ऊँचा उठकर जोर से हिनहिनाने लगा।

तभी कुमार सम्प्रति उछलकर घोड़े की पीठ पर चढ़ गया। कसकर लगाम खींची। घोड़ा घूमचक्कर खाने लगा।

अरे ! घोड़ा कुमार को उछालकर पटकी देगा। कुमार ! सावधान !

कुमार ने अपनी जेब में से एक कंकर निकाला और घोड़े के कान के बीच में दबा दिया। घोड़ा तुरन्त शान्त हो गया।

कुमार ने ऐड लगाई। घोड़ा सीधा सरपट दौड़ पड़ा।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक घंटा बाद कुमार ने घोड़ा लाकर सौदागर के सामने खड़ा कर दिया–

लो तुम्हारा घोड़ा। ऐसे घोड़ों पर सवारी करना तो हमारी क्रीड़ा है।

महाराज ! शर्त के अनुसार एक सौ अश्व आपको भेंट करता हूँ।

महाराज अशोक ने सम्प्रति को अपने बाजुओं में कस लिया–

वत्स ! तेरा तेज, प्रताप, शौर्य एक दिन तुझे अवश्य ही दिग्विजयी सम्राट् बनायेगा।

एक दिन महाराज अशोक अपने परिवार के साथ अन्तःपुर में बैठे थे। उन्होंने कुणाल से कहा–

वत्स ! अब सम्प्रति युवा हो गया है। अनेक राजाओं की राजकन्याओं के सम्बन्ध आ रहे हैं। इसके विवाह की तैयारी करो।

जो आज्ञा पिताश्री !

सम्प्रति का अनेक राजकन्याओं के साथ विवाह हुआ। विवाह उत्सव के समय महाराज अशोक ने घोषणा की–

मैं अब बहुत वृद्ध हो चुका हूँ। वृद्ध अवस्था तो धर्मध्यान, प्रभुभक्ति का समय है। इसलिए युवराज सम्प्रति को मगध का राज सिंहासन सौंपना चाहता हूँ।

इस प्रकार विवाह उत्सव में ही सम्प्रति का राजतिलक समारोह मनाया गया।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुछ समय पश्चात् अशोक की मृत्यु हो गई। कई दिन तक मगध राज्य शोक में डूबा रहा। शोक से उबरने पर सम्प्रति ने विचार किया–

मुझे अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहिए।

विशाल सेना के साथ वह काशी कौशल आदि राज्यों पर विजय करने निकल पड़ा।

काशी पहुँचने पर वहाँ के गुप्तचरों ने राजा को सूचना दी–

मगधेश्वर सम्राट् सम्प्रति अद्भुत शौर्य का धनी योद्धा है। उसकी सेना अजेय है। उससे युद्ध करना सर्वनाश को निमंत्रण देना है।

काशी आदि के राजाओं ने मिलकर निर्णय लिया–

व्यर्थ ही नरसंहार से क्या लाभ है? उगते सूर्य का प्रताप बादलों से ढक नहीं सकता।

राजाओं ने अनेक तरह के उपहार और अपनी कन्यायें भेंट कर सम्प्रति की अगवानी की। सम्प्रति ने प्रेमपूर्वक उपहार स्वीकार किये–

हम आपकी शरण में ही हैं।

मुझे आपका ऐश्वर्य वैभव नहीं चाहिए। न ही मैं प्रजा का संहार करना चाहता हूँ। आप मगध की छत्र छाया में रहें। बस यही हमारी आज्ञा है।

काशी आदि राज्यों को अपनी छत्र-छाया में मिलाने के पश्चात् सम्प्रति ने मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र आदि को विजय करके दूर-दूर देशों तक मगध साम्राज्य का विस्तार किया।

अनेक देशों की विजय यात्रा करते हुए सम्राट् सम्प्रति अवन्ति वापस पहुँचे। अवन्ति में उनका भव्य स्वागत हुआ।

सम्राट् सम्प्रति की जय हो।

सम्राट् सम्प्रति चिरायु हों।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्राट् सीधे राजभवन में पहुँचे। पिता एवं माताश्री के चरणों में प्रणाम किया। माता पुत्र की अपार समृद्धि और वैभव विस्मित-सी देखती रही। उसकी आँखें छलछला रहीं थीं परन्तु मुँह से शब्द नहीं निकल रहा था। सम्प्रति ने कहा–

माँ ! देख तेरे पुत्र की यह अपार समृद्धि, ये हजारों सामन्त-राजा, यह समूचे आर्यवर्त का साम्राज्य तेरे चरणों में हाजिर है।

शरतश्री कुछ देर तक विस्मित रही फिर एकदम गंभीर हो गई। सम्प्रति ने पूछा–

माँ ! क्या अपने पुत्र की यह समृद्धि देखकर तू प्रसन्न नहीं है?

वत्स ! ऐसी बात नहीं है। अपने विश्व विजयी पुत्र को देखकर कौन माता प्रसन्न नहीं होगी, परन्तु ···।

परन्तु क्या ··· माँ? कोई कमी रह गई?

बेटा ! हजारों युद्ध करके, लाखों मनुष्यों का संहार करके आखिर तूने क्या पाया?

माँ ! समूचे आर्यावर्त का साम्राज्य ! अपने दादा-परदादाओं के साम्राज्य से भी विशाल वृहत्तर साम्राज्य ! क्या और कुछ बाकी रह गया है?

पुत्र ! हिंसा से प्राप्त साम्राज्य आज तक किसी के लिए भी सुखकर नहीं हुआ। ब्रह्मदत्त जैसा षट्खंड चक्रवर्ती और अजातशत्रु कूणिक जैसा दिग्विजयी सम्राट् भी अन्त में इस साम्राज्य को छोड़कर नरक में गये हैं।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्राट् सम्प्रति माता की बातें सुनकर गंभीर हो गया। माता कहने लगी—

वत्स ! तीन खण्डों पर तेरी विजय ध्वजा लहराती देखकर मैं दुःखी नहीं, परन्तु मन में आनन्द भी नहीं है।

माँ ! फिर बता ! तुझे आनन्द कैसे मिलेगा? मैं वही काम करूँगा जिससे तुझे आनन्द मिले।

तुझे आनन्द और सुख का मार्ग जानना है तो आर्य सुहस्ती स्वामी से पूछना। कल वे इस नगर में पधारेंगे।

ठीक है माँ, तू जैसा कहती है वैसा ही करूँगा।

सम्राट् सम्प्रति रातभर सोचता रहा—

कल आर्य सुहस्ती स्वामी पधारेंगे और मैं उनसे माता को प्रसन्न करने का उपाय पूछूँगा। अपने सुख का मार्ग भी जानूँगा।

प्रातः महलों की छत पर सम्राट् चहलकदमी करने लगा तभी देखा राजमार्ग पर एक विशाल जुलूस चला आ रहा है। अनेक प्रकार के बाजे, नगाड़े बज रहे हैं। उनके पीछे नगर के श्रीमन्त सेठ, वृद्ध, युवक, बालक और फिर हजारों स्त्रियाँ गाते-बजाते-नाचते हुए चल रहे हैं। बीच में एक विशाल चाँदी का रथ है। रथ में जीवन्त स्वामी की प्रतिमा विराजमान है। उनके पीछे उज्ज्वल श्वेत वस्त्रधारी एक दिव्य भव्य तेजस्वी सन्त चल रहे हैं। पीछे-पीछे सैकड़ों श्रमण-श्रमणियाँ चल रहे हैं।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छत पर खड़ा सम्प्रति इस रथ यात्रा को देखने लगा। तभी उसकी दृष्टि उस दिव्य प्रभावशाली वृद्ध सन्त पर पड़ी। सम्राट् बड़े ध्यानपूर्वक उनको देखने लगा–

सोचते-सोचते सम्राट् मूर्च्छा खाकर गिर पड़ा–

सेवकों ने सम्राट् को उठाकर पलंग पर लिटाया। हवा की। पानी के छींटे डाले। थोड़ी देर बाद होश आया तो उसकी स्मृति में कुछ दृश्य आने लगे–

सम्राट् उठकर बैठ गये इधर-उधर देखा। सेवकों ने पूछा–

इतना कहकर सम्प्रति सीधा राजमहल से नीचे उतरा और रथयात्रा के पीछे-पीछे दौड़ा। सम्राट् के पीछे सैनिक, मंत्री दौड़ पड़े। सब एक-दूसरे से पूछते हैं–

और उत्तर दिए बिना सभी सम्राट् के पीछे-पीछे दौड़ने लगे।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नंगे पाँव सम्राट् को दौड़ता देख लोग एक ओर हट गये। सम्राट् सम्प्रति दौड़कर आर्य सुहस्ती के सामने पहुँचा। तीन बार प्रदक्षिणा करके वन्दना की। आचार्यश्री आश्चर्यपूर्वक सम्राट् को देखने लगे।

हाथ जोड़कर सम्राट् ने पूछा–

गुरुदेव ! आप मुझे पहचानते हैं?

हाँ, आप सम्राट् सम्प्रति हैं, महाराज अशोकवर्धन के पौत्र ! पितृभक्त वीर कुणाल के पुत्र आपको कौन नहीं पहचानता?

आचार्यश्री हँसते हुए बोले।

नहीं ! गुरुदेव ! मेरी असली पहचान बताइये।

दो क्षण आचार्यश्री एकाग्र होकर उसे देखते हैं।

और फिर मुस्कराकर बोले–

राजन् ! मैंने आपको अच्छी तरह पहचान लिया। कौशाम्बी नगरी में एक भिक्षुक ने मोदक खाने के लिए दीक्षा ली थी। फिर अति आहार से उसी दिन उसकी मृत्यु हो गई। वही आत्मा आज सम्राट् सम्प्रति के रूप में यहाँ उपस्थित है।

सम्राट् के पूर्व जीवन का वृत्तान्त सुनकर सभी आश्चर्यचकित एक-दूसरे को देखने लगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary

सम्राट् ने पुनः वन्दना करके पूछा—

भगवन् ! धर्म प्राप्ति का फल क्या है?

धर्म का सर्वोत्तम फल है—मोक्ष और सामन्य फल वैभव आदि की प्राप्ति।

फिर सम्राट् ने गुरुदेव के चरणों का स्पर्श कर निवेदन किया—

भगवन् ! सामायिक चारित्र का क्या फल है?

राजन् ! शुद्ध सामायिक रूप चारित्र का तो असीम फल है, परन्तु तुमने अव्यक्त सामायिक चारित्र का स्पर्श किया, उसका फल है विशाल राज्य संपदा की प्राप्ति।

गुरुदेव ! यह सब समृद्धि आपकी कृपा से ही मिली है इसलिए यह सम्पूर्ण राज्य आपके चरणों में समर्पित करता हूँ।

सम्राट् ! हम त्यागी साधु एक सुई का परिग्रह भी नहीं रखते। यह राज्य वैभव कैसे स्वीकार कर सकते हैं?

गुरुदेव ! मुझे धर्म का मार्ग बताइए, कल ही मेरी माता ने कहा था, आप ही मुझे धर्म का मार्ग बतायेंगे।

सम्राट् ! अभी आप रथ महोत्सव में सम्मिलित होकर जीवन्त स्वामी की वन्दना पूजा कीजिए। फिर समय पर आपकी जिज्ञासा का समाधान भी करेंगे।

सम्राट् नंगे पैरों रथयात्रा में जनता के साथ-साथ चलने लगा।



Jain Education International For Personal Use Only www.jainelibrary.org

दूसरे दिन सम्राट् सम्प्रति आचार्यश्री की वन्दना करने आया। वन्दना करके उसने पूछा–

भगवन् ! मैं अपनी माता को कैसे प्रसन्न कर सकता हूँ?

राजन् ! तुम्हारी माता परम धार्मिक विचारों की है। धर्म कार्य करने से ही उसके मन को प्रसन्नता मिलेगी।

भगवन् ! बताइए मैं क्या धर्म कार्य करूँ?

राजन् ! जिनमन्दिरों का निर्माण और प्राचीन मन्दिरों का जीर्णोद्धार करना महान् पुण्य लाभ है। तुम यह कार्य करने में समर्थ हो। राजन् ! साधु-साध्वी, श्रावक-श्राविका धर्म के चार आधार स्तंभ हैं। इनकी सेवा-वैयावच्च करना भी महान् पुण्य का कार्य है।

इस प्रकार गुरुदेव से धर्म चर्चा करके सम्राट् सम्प्रति दृढ़धर्मी व्रतधारी श्रावक बन गया।

रथोत्सव की समाप्ति के दिन सम्राट् ने अपने सामन्तों से कहा–

हे सामन्तों, मुझे आपका धन नहीं चाहिए। अपना राज्य भी आप आनन्द से भोगें, परन्तु मेरी एक ही इच्छा है आप जैनधर्म अंगीकार कर अपने देश और नगर में जिनधर्म की प्रभावना करें, सारी प्रजा को धर्म मार्ग में लगाएँ। बस, मेरी यही एक अभिलाषा है।

हम आपकी आज्ञा का पालन करेंगे।

वहाँ उपस्थित सभी सामन्तों ने जैनधर्म अंगीकार कर लिया।

एक दिन सम्राट् ने आचार्यश्री से पूछा–

गुरुदेव ! अब सर्वप्रथम मुझे क्या करना चाहिए?

राजन् ! धर्म आराधना का एक प्रखर साधन है–जिन चैत्य। जिन चैत्य रहेंगे तो सबको धर्म की प्रेरणा मिलती रहेगी।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्यश्री के समक्ष उसने प्रतिज्ञा ली—

आज से प्रतिदिन एक जिनमन्दिर के निर्माण या जीर्णोद्धार का समाचार सुनकर ही मैं मुँह में अन्न-जल रखूँगा।

एक दिन प्रातः राजा गुरु वन्दना करने आया। उसने आचार्यश्री से निवेदन किया—

गुरुदेव ! भरतखण्ड के बाहर अनेक आर्य देशों में भी मेरा राज्य है। वहाँ धर्म प्रचार के लिए अपने शिष्यों को क्यों नहीं भेजते?

राजन् ! अनार्य लोग श्रमण के आचार-विचार से परिचित नहीं हैं, इसलिए वहाँ मुनियों को निर्दोष आहार-भिक्षा कैसे मिल सकती है?

मैं इसकी भी उचित व्यवस्था करूँगा।

सम्राट् सम्प्रति ने कुछ तत्वज्ञानी वृद्ध श्रावकों को बुलाकर कहा—

आप मुनि वेश धारण करके अनार्य देशों में जाएँ, वहाँ जिनमन्दिर बनवाएँ और लोगों को जैनधर्म तथा श्रमणाचार की शिक्षा दें। राज्य की ओर से आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

कुछ विद्वान् उपदेशक अनार्य देशों में गये। उनके साथ सम्राट् के सैनिक और राज-कर्मचारी भी थे। लोगों ने मुनिवेशधारी श्रावकों को देखकर पूछा—

ये कौन हैं?

ये सम्राट् सम्प्रति के गुरु हैं। तुम इनकी वन्दना करो और इनसे धर्म की शिक्षा लो।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्राट् के गुरु समझकर लोग उन वेशधारी श्रमणों के पास आने लगे। श्रमणों ने उन्हें मुनि की आचार मर्यादा आदि समझाई।

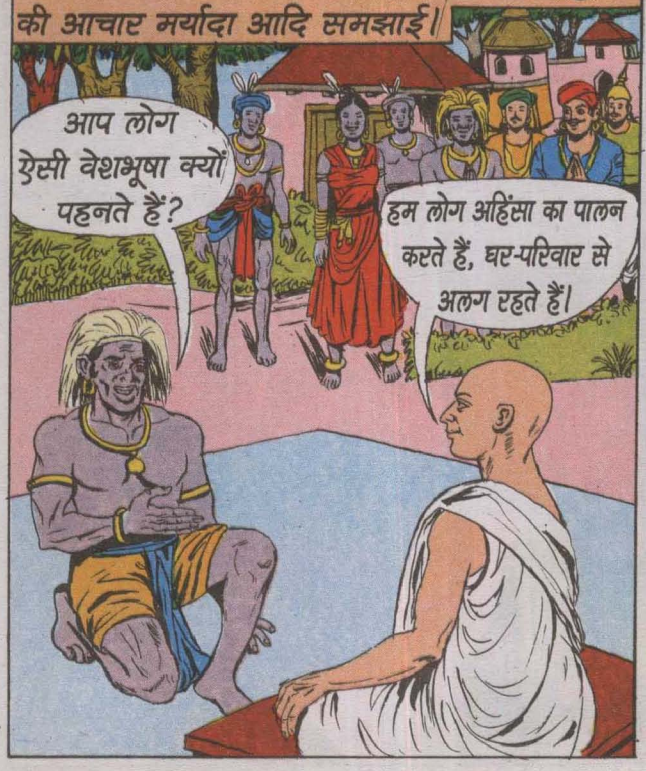


सम्राट् सम्प्रति के गुप्तचर उन्हें अनार्य देशों के समाचार देते रहते थे। एक दिन सम्राट् ने आर्य सुहस्ती स्वामी से प्रार्थना की–

आचार्यश्री ने कुछ विशिष्ट श्रमणों को पारस, ग्रीस आदि देशों में भेजा। वहाँ गये उपदेशक साधुओं ने कहा–

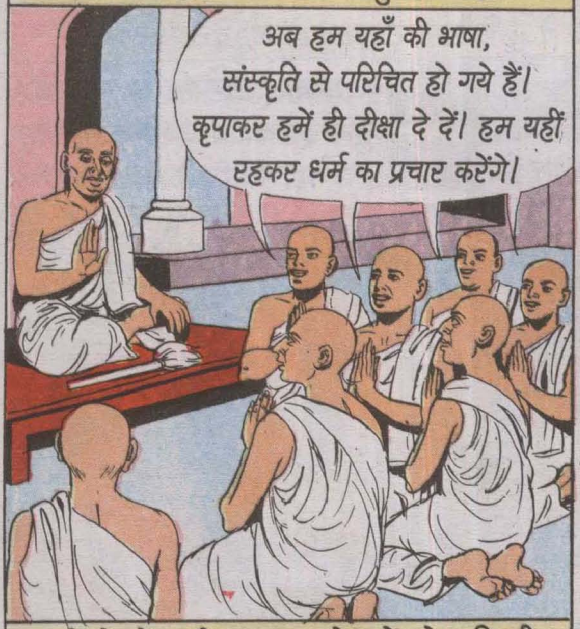


श्रमणों ने योग्य देखकर उपदेशकों को मुनि दीक्षा दे दी। इस प्रकार दूर-दूर देशों में जैनधर्म का प्रचार होने लगा। हजारों लोग जैन बन गये।

एक बार पर्युषण के दिन सम्राट् ने एक दृश्य देखा। सम्राट् को अपने पूर्व जीवन की याद आ गई–

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूख से व्याकुल मनुष्य के कष्टों की कल्पना करके सम्राट् के शरीर में सिहरन पैदा हो गई। उसने राज-सेवकों को बुलाकर कहा–

नगर के चारों दरवाजों के बाहर विशाल भोजनशालाएँ बनवा दो। कोई भी दीन-दुःखी, अपंग, भूखा नहीं सोये।

सम्राट् के आदेश से भोजनशालाओं का निर्माण किया गया। प्रतिदिन हजारों मनुष्यों को भोजन मिलने लगा।

आचार्यश्री ने एक बार सम्राट् से कहा–

ज्ञान के अभाव में धर्म स्थिर नहीं रहता, इसलिए लोगों में ज्ञान का प्रसार होना चाहिए।

आचार्यश्री के संकेतानुसार सम्राट् ने आज्ञा दी–

राज्य के सभी मुख्य-मुख्य नगरों में ज्ञानशालाएँ खुलवाई जाएँ। शिक्षकों को राज्य की तरफ से वेतन दिया जाए और बालक, युवक सभी को निःशुल्क शिक्षा दी जाए।

इस प्रकार जिनमन्दिर निर्माण, धर्म प्रचार, ज्ञान प्रचार तथा जीव दया आदि शुभ कार्यों में अकूत धन व्यय करके सम्राट् सम्प्रति ने महान् पुण्यों का अर्जन किया।



Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान महावीर निर्वाण के २६७ वर्ष बाद आर्य सुहस्ती स्वामी ने सुस्थित और सुप्रतिबद्ध नामक दो प्रभावशाली शिष्यों को संघ का भार सौंपकर १०० वर्ष की आयुष्य में अनशन करके देह त्याग दिया। सम्राट् सम्प्रति गहरे दुःख के सागर में डूब गये।

कहा जाता है, सम्राट् सम्प्रति ने पीतल, ताँबा, चाँदी, सोना आदि पाषाण की लगभग सवा करोड़ जिन प्रतिमाएँ स्थापित करवाईं। नाडोल, शत्रुंजय, गिरनार, रतलाम आदि स्थानों में आज भी सम्प्रति द्वारा स्थापित प्रतिष्ठित जिन प्रतिमाएँ प्राप्त होती हैं। उन्होंने ६,६०० प्राचीन मन्दिरों का जीर्णोद्धार तथा १,२५,००० नवीन जिन चैत्यों का निर्माण कराकर एक अपूर्व-अद्भुत धर्म प्रभावना की।

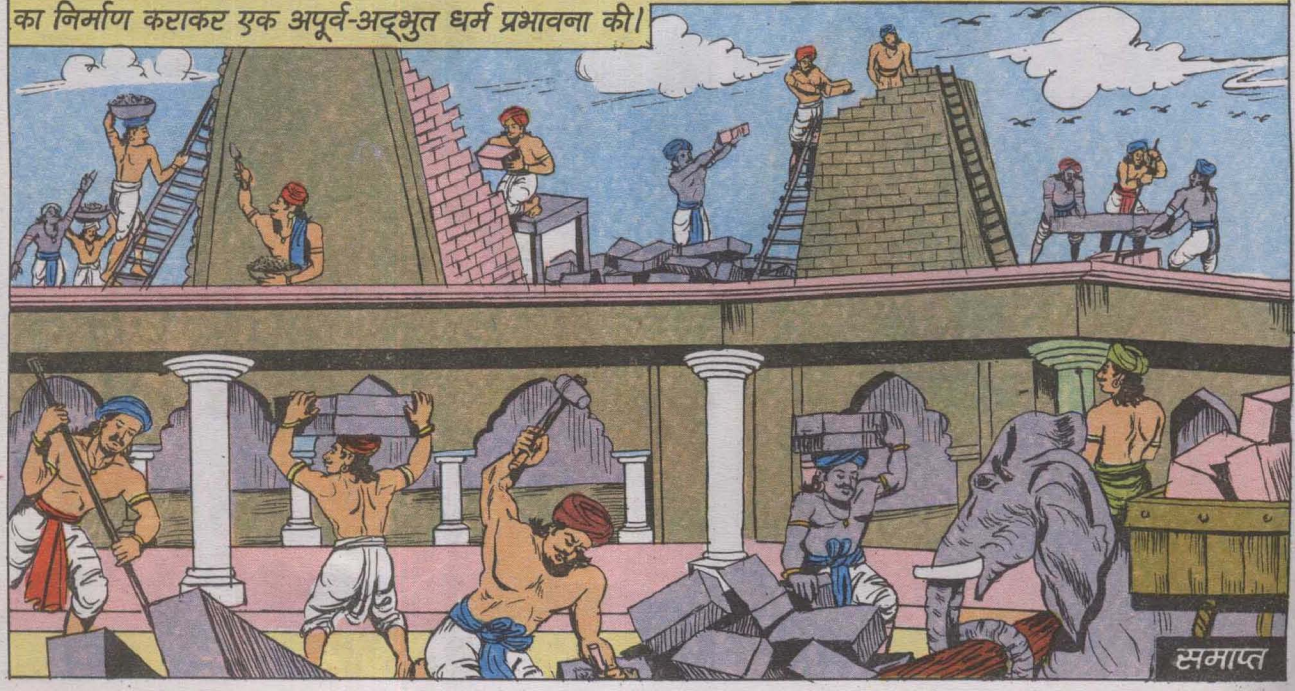




Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# वार्षिक सदस्यता फार्म

मान्यवर,

मैं आपके द्वारा प्रकाशित चित्रकथा का सदस्य बनना चाहता हूँ। कृपया मुझे निम्नलिखित वर्षों के लिए सदस्यता प्रदान करें।

(कृपया बॉक्स पर ☑ का निशान लगायें)

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ☐ | तीन वर्ष के लिये | अंक 34 से 66 तक | (33 पुस्तकें) | 540/- |
| ☐ | पाँच वर्ष के लिये | अंक 12 से 66 तक | (55 पुस्तकें) | 900/- |
| ☐ | दस वर्ष के लिये | अंक 1 से 108 तक | (108 पुस्तकें) | 1,800/- |

मैं शुल्क की राशि एम. ओ./ड्राफ्ट द्वारा भेज रहा हूँ। मुझे नियमित चित्रकथा भेजने का कष्ट करें।

नाम (Name)_____
(in capital letters)

पता (Address)_____

_____

_____ पिन (Pin)_____

M.O./D.D. No._____ Bank_____ Amount_____

हस्ताक्षर (Sign.)_____

**नोट**—
- यदि आपको अंक 1 से चित्रकथायें मंगानी हो तो कृपया इस लाईन के सामने हस्ताक्षर करें .....
- कृपया चैक के साथ 25/- रुपये अधिक जोड़कर भेजें।
- पिन कोड अवश्य लिखें।

चैक/ड्राफ्ट/एम.ओ. निम्न पते पर भेजें—


## SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002. PH. : 0562-351165


### दिवाकर चित्रकथा की प्रमुख कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धि निधान अभय कुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना
9-10 करुणा निधान भ. महावीर (भाग-1, 2)
11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्ध चक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजना सुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया (प्रत्येक बुद्ध)
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरी
24. वचन का तीर
25. अजात शत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार (अन्त मति सो गति)
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का जाल
31. पाँच रत्न
32. अमृत पुरुष गौतम
33. आर्य सुधर्मा
34. पुणिया श्रावक
35. छोटी-सी बात
36. भरत चक्रवर्ती
37. सद्दाल पुत्र
38. रूप का गर्व
39. उदयन और वासवदत्ता
40. कलिकाल सर्वज्ञ हेमचन्द्राचार्य
41. कुमारपाल और हेमचन्द्राचार्य
42. दादा गुरुदेव जिनकुशल सूरी
43. श्रीमद् राजचन्द्र


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# एक बात आपसे भी.....

सम्माननीय बन्धु,

सादर जय जिनेन्द्र !

जैन साहित्य में संसार की श्रेष्ठ कहानियों का अक्षय भण्डार भरा है। नीति, उपदेश, वैराग्य, बुद्धिचातुर्य, वीरता, साहस, मैत्री, सरलता, क्षमाशीलता आदि विषयों पर लिखी गई हजारों सुन्दर, शिक्षाप्रद, रोचक कहानियों में से चुन-चुनकर सरल भाषा-शैली में भावपूर्ण रंगीन चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करने का एक छोटा-सा प्रयास हमने गत चार वर्षों से प्रारम्भ किया है।

अब यह चित्रकथा अपने पाँचवे वर्ष में पदार्पण करने जा रही है।

इन चित्रकथाओं के माध्यम से आपका मनोरंजन तो होगा ही, साथ ही जैन इतिहास संस्कृति, धर्म, दर्शन और जैन जीवन मूल्यों से भी आपका सीधा सम्पर्क होगा।

हमें विश्वास है कि इस तरह की चित्रकथायें आप निरन्तर प्राप्त करना चाहेंगे। अतः आप इस पत्र के साथ छपे सदस्यता पत्र पर अपना पूरा नाम, पता साफ-साफ लिखकर भेज दें।

आप इसके तीन वर्षीय (33 पुस्तकें), पाँच वर्षीय (55 पुस्तकें) व दस वर्षीय (108 पुस्तकें) सदस्य बन सकते हैं।

आप पीछे छपा फार्म भरकर भेज दें। फार्म व ड्राफ्ट/एम. ओ. प्राप्त होते ही हम आपको रजिस्ट्री से अब तक छपे अंक तुरन्त भेज देंगे तथा शेष अंक (आपकी सदस्यता के अनुसार) प्रत्येक माह डाक द्वारा आपको भेजते रहेंगे।

धन्यवाद !

आपका

**नोट–वार्षिक सदस्यता फार्म पीछे है।**

**श्रीचन्द सुराना 'सरस'**

सम्पादक


## SHREE DIWAKAR PRAKASHAN

A-7, AWAGARH HOUSE, OPP. ANJNA CINEMA, M. G. ROAD, AGRA-282 002. PH. : 0562-351165

### हमारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त सचित्र भावपूर्ण प्रकाशन

| पुस्तक का नाम | मूल्य | पुस्तक का नाम | मूल्य | पुस्तक का नाम | मूल्य |
|---|---|---|---|---|---|
| सचित्र भक्तामर स्तोत्र | 325.00 | सचित्र ज्ञातासूत्र (भाग-1, 2) | 1,000.00 | सचित्र दशवैकालिक सूत्र | 500.00 |
| सचित्र णमोकार महामंत्र | 125.00 | सचित्र कल्पसूत्र | 500.00 | भक्तामर स्तोत्र (जेबी गुटका) | 18.00 |
| सचित्र तीर्थंकर चरित्र | 200.00 | सचित्र उत्तराध्ययन सूत्र | 500.00 | सचित्र मंगल माला | 20.00 |
| सचित्र आचारांग सूत्र | 500.00 | सचित्र अन्तकृद्दशा सूत्र | 500.00 | सचित्र भावना आनुपूर्वी | 21.00 |

### चित्रपट एवं यंत्र चित्र

| | | | |
|---|---|---|---|
| सर्वसिद्धिदायक णमोकार मंत्र चित्र | 25.00 | श्री गौतम शलाका यंत्र चित्र | 15.00 |
| भक्तामर स्तोत्र यंत्र चित्र | 25.00 | श्री सर्वतोभद्र तिजय पहुत्त यंत्र चित्र | 10.00 |
| श्री वर्द्धमान शलाका यंत्र चित्र | 15.00 | श्री घंटाकरण यंत्र चित्र | 25.00 |
| श्री सिद्धिचक्र यंत्र चित्र | 20.00 | श्री ऋषिमण्डल यंत्र चित्र | 20.00 |


Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# सेवा शिक्षा और साधना के लिये समर्पित सात दशक

# SHREE SHWETAMBER STHANAKVASI JAIN SABHA

## (EST. 1928)

18/D, SUKEAS LANE, CALCUTTA-700 001
Tel. : (242) 6369, 4958 Fax : (210) 4139

## DIFFERENT ACTIVITIES

1. **SHREE JAIN VIDYALAYA (H.S.) (EST. 1934)**
   CALCUTTA-700 001
   2,700 STUDENTS (CLASS I TO XII)

2. **SHREE JAIN VIDYALAYA FOR BOYS (EST. 1992)**
   25/1, BON BEHARI BOSE ROAD, HAWRAH-700 001
   HIGHER SECONDARY INST.
   2,500 STUDENTS CLASS I TO XII

3. **SHREE JAIN VIDYALAYA FOR GIRLS (H. S.) (EST. 1992)**
   25/1, BON BEHARI BOSE ROAD, HAWRAH-700 001
   HIGHER SECONDARY INST.
   2,500 STUDENTS CLASS I TO XII

4. **SHREE JAIN BOOK BANK PROJECT (EST. 1978)**
   DISTRUBING 2000 SETS OF BOOKS TO THE REGULAR STUDENTS OF W.B.
   AT PRESENT ABOUT 100 CENTRES

5. **SHREE JAIN HOSPITAL & RESEARCH CENTRE**
   493-B/12, G. T. ROAD, (S) HAWRAH-700 002
   A 220 BEDDED GENRAL HOSPITAL EARTH MODREN EQUIPEMENT AND 24 HOURS AMBULANCE SERVICES WITH X-RAY, ECG, SONOGRAPHY, ULTRA SOUND, ICU, ICCU, EYE, ENT, DENTAL PEADRIATIC GYANE, LAPROSCOPY ETC. LATEST O. T. INSTRUMENTS WITH RENOWNED DOCTORS. FREE ARTIFICIAL LIMB AND CALIPER DISTRIBUTION ROUND THE YEAR.

6. **MANAV SEVA PRAKALP**
   RENDERING ITS SERVICES BY SUPPLYING FREE RATION TO POOR, DISABLED AND NEEDY PEOPLE ROUND THE YEAR. ABOUT 125 PEOPLE ARE TAKING THE ADVANTAGE THROUGH THIS PRAKALP.

7. **FREE EYE-OPERATION CAMP** : THRICE IN A YEAR BY REPUTED DOCTORS.
   FREE MEDICINE & SPECTACLE DISTRIBUTION : THRICE IN A YEAR.

8. FREE MEDICAL CHECK-UP, BLOOD DONATION.

9. SEMINAR ON CARDIAC CARE, DIABITIS, HEALTH CARE, CHILD CARE ETC WITH THE HELP OF REPUTED MEDICAL COMPANIES & RENOWNED DOCTORS.

10. **SHREE JAIN SHILPA SHIKSHA KENDRA, CALCUTTA (EST. 1984)**
    (RECOGNISED BY THE N. O. S.)
    MINISTRY OF HUMAN RESOURSE & DEVELOPMENT GOVT. OF INDIA.
    CLASS X & XII

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

# जैनधर्म के प्रसिद्ध विषयों पर आधारित रंगीन सचित्र कथाएं : दिवाकर चित्रकथा

जैनधर्म, संस्कृति, इतिहास और आचार-विचार से सीधा सम्पर्क बनाने का एक सरलतम, सहज माध्यम। मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानवर्द्धक, संस्कार-शोधक, रोचक सचित्र कहानियाँ।

## प्रसिद्ध कड़ियाँ

1. क्षमादान
2. भगवान ऋषभदेव
3. णमोकार मन्त्र के चमत्कार
4. चिन्तामणि पार्श्वनाथ
5. भगवान महावीर की बोध कथायें
6. बुद्धिनिधान अभयकुमार
7. शान्ति अवतार शान्तिनाथ
8. किस्मत का धनी धन्ना

9-10. करुणानिधान भ. महावीर

11. राजकुमारी चन्दनबाला
12. सती मदनरेखा
13. सिद्धचक्र का चमत्कार
14. मेघकुमार की आत्मकथा
15. युवायोगी जम्बूकुमार
16. राजकुमार श्रेणिक
17. भगवान मल्लीनाथ
18. महासती अंजनासुन्दरी
19. करनी का फल (ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती)
20. भगवान नेमिनाथ
21. भाग्य का खेल
22. करकण्डू जाग गया
23. जगत् गुरु हीरविजय सूरि
24. वचन का तीर
25. अजातशत्रु कूणिक
26. पिंजरे का पंछी
27. धरती पर स्वर्ग
28. नन्द मणिकार
29. कर भला हो भला
30. तृष्णा का फल
31. पाँच रत्न

**55 पुस्तकों के सैट का मूल्य 900.00 रुपया।** **33 पुस्तकों के सैट का मूल्य 540.00 रुपया।**

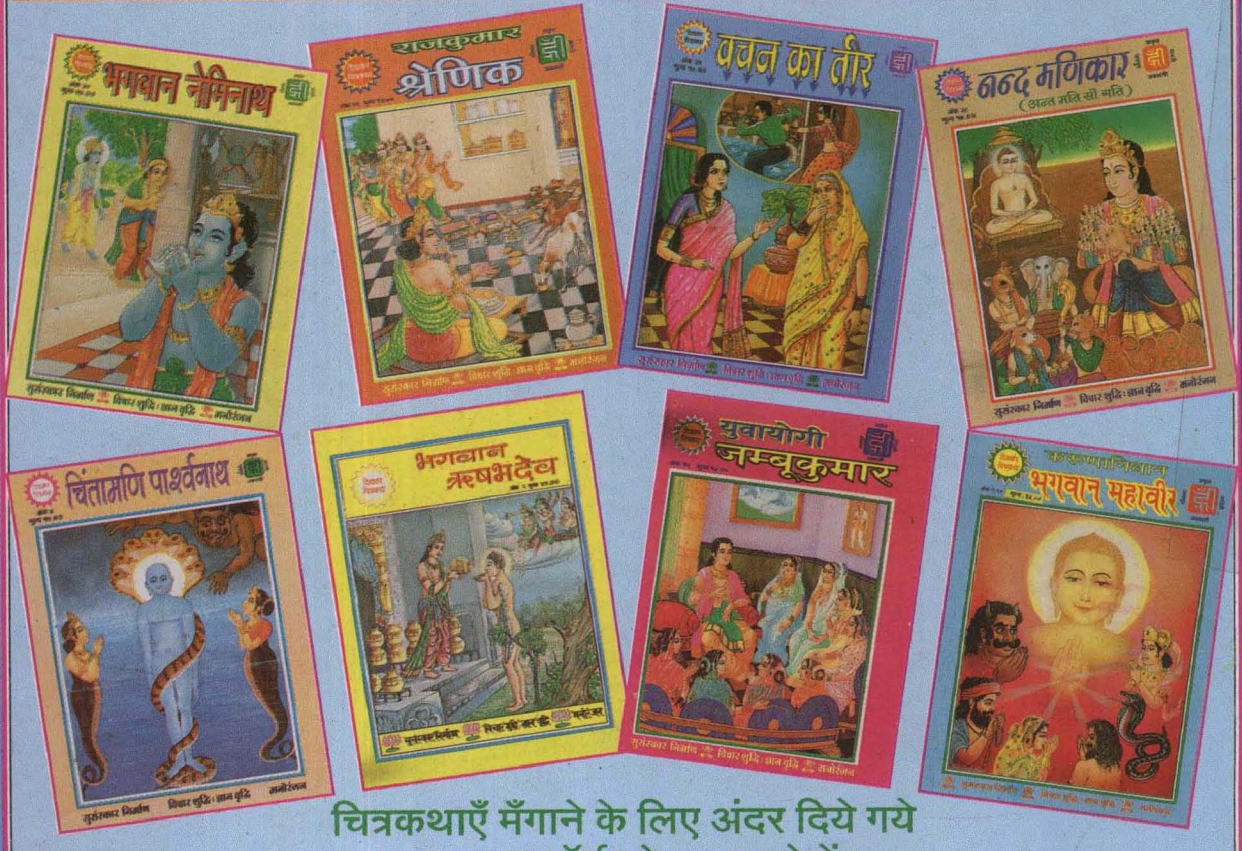


चित्रकथाएँ मँगाने के लिए अंदर दिये गये सदस्यता फॉर्म को भरकर भेजें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org